Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **09.03.2018** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

जब तक इंसान अपनी इच्छाओं तथा स्वार्थों से अलग होकर ख़ुदा तआला के समक्ष नहीं आता वह कुछ प्राप्त नहीं करता। समस्त सांसारिक सम्मान उसी को दिए जाते हैं तथा प्रत्येक दिल में उसी की प्रतिष्ठा एवं सम्मान रख दिया जाता है जो ख़ुदा तआला के लिए सब कुछ छोड़ने और खोने के लिए तय्यार हो जाते हैं।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा के बलिदानों तथा उनके स्तर एवं उच्च कोटि और अल्लाह तआला के उन पर पुरस्कारों का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी पूरी सम्पत्ति ख़ुदा की राह में दे दी तथा स्वयं कम्बल पहन लिया था। किन्तु अल्लाह तआला ने उन्हें इस पर क्या दिया? सारे अरब देश का उन्हें राजा बना दिया तथा उन्हीं के हाथों के द्वारा इस्लाम को नए सिरे से जीवित किया और मुरतद (विमुख) अरब को फिर विजय करके दिखाया तथा वह कुछ दिया जो कोई सोच भी नहीं सकता था। फ़रमाते हैं- अभिप्रायः यह है कि उन लोगों का सत्य एवं निष्ठा तथा श्रद्धा और प्रेम प्रत्येक मुसलमान के लिए सुन्दर नमूना है। सहाबा का जीवन एक ऐसा जीवन था कि समस्त नबियों में से किसी नबी के जीवन में ऐसा उदाहरण नहीं पाया जाता। फ़रमाते हैं कि वास्तविकता यह है कि जब तक इंसान अपनी अभिलाषाओं एवं स्वार्थ से पृथक नहीं होकर ख़ुदा तआला के समक्ष नहीं आता वह कुछ प्राप्त नहीं करता अपितु अपनी हानि करता है परन्तु जब वह समस्त स्वार्थों एवं अभिलाषाओं से अलग हो जावे तथा ख़ाली हाथ और स्वच्छ मन लेकर ख़ुदा तआला के सम्मुख जावे तो ख़ुदा उसको देता है और ख़ुदा तआला उसकी सहायता करता है किन्तु आवश्यक यही है कि इंसान मरने का तय्यार हो जावे तथा उसके मार्ग में अपमान तथा मृत्यु के भय को छोड़ने वाला बन जावे। फ़रमाया- देखो दुनिया एक नश्वर चीज़ है, कोई इसमें सदा के लिए नहीं रहता किन्तु इसका आनन्द भी उसी को मिलता है जो इसको ख़ुदा के लिए छोड़ते हैं। यही कारण है कि जो मनुष्य ख़ुदा तआला का चाहने वाला होता है ख़ुदा तआला दुनिया में उसके लिए क़बूलियत फैला देता है। यह वही क़बूलियत है जिसके लिए भौतिक वादी हज़ार प्रयास करते हैं कि किसी प्रकार कोई उपाधि मिल जावे अथवा किसी सम्मान का पद अथवा दरबार में कुर्सी मिले और पदाधिकारियों में नाम लिखा जावे। अर्थात सारी सांसारिक प्रतिष्ठाएँ उसी को दी जाती हैं तथा प्रत्येक दिल में उसका मान सम्मान दिया जाता है जो ख़ुदा तआला के लिए सब कुछ छोड़ने और खोने के लिए तय्यार हो जाते हैं, न केवल तय्यार होते हैं अपितु छोड़ देते हैं। अभिप्रायः यह है कि ख़ुदा तआला के लिए खोने वालों को सब कुछ दिया जाता है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि धरती की सरकारों के लिए जो तनिक सा कुछ बलिदान करता है उसको प्रतिफल मिलता है तो जो ख़ुदा के लिए बलिदान करे तो क्या उसे प्रतिफल न मिलेगा। फ़रमाया- वे नहीं मरते जब कि वे इससे अधिक बदला न पा लें जो उन्होंने ख़ुदा की राह में दिया है। ख़ुदा तआला किसी का उधार अपने ज़िम्मे नहीं रखता किन्तु खेद यह है कि इन बातों के मानने वाले तथा इनके यथार्थ पर सूचना पाने वाले बहुत कम लोग हैं। यह सत्य, निष्ठा तथा श्रद्धा और प्रेम दिखाने वालों के नमूने हमें इस शान से नज़र आते हैं कि इंसान चकित रह जाता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र आत्मा ने न केवल उनके स्नेहों के रुख़ बदल दिए बल्कि उन मुहब्बतों के माप दंडों को वह चरम सीमा प्रदान कर दी जिसका उदाहरण पहली दुनिया में नहीं मिलता। सहाबा अपनी सम्पूर्ण सांसारिक इच्छाओं से

विशुद्ध थे। पवित्र मन के साथ और अल्लाह तआला के लिए विशुद्ध होर, केवल और केवल ख़ुदा तआला की प्रशंसा प्राप्ति के लिए अपना जीवन यापन करने वाले थे और जब यह अवस्था हो तो फिर ख़ुदा तआला भी देता है तथा हम ये बातें सहाबा के जीवन में देखते हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कुछ सहाबा के उदाहरण पेश करता हूँ कि किस प्रकार उन्होंने अपनी आत्माओं को ख़ुदा की शरण में दे दिया था, क्या नमूने उन्होंने दिखाए।

हज़रत इबाद बिन बशर एक अन्सारी सहाबी थे। पूरी युवा अवस्था में लगभग पैंतीस वर्ष की आयु में उनको शहीद होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनकी इबादत तथा क़ुर्आन-ए-करीम की तिलावत की एक घटना बयान करते हुए हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि एक रात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तहज्जुद के समय जागे तो मिस्जद से क़ुर्आन-ए-करीम की तिलावत की आवाज़ आ रही थी। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या यह आवाज़ इबाद की है। हज़रत आयशा ने कहा कि उन्हीं की लगती है। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको दुआ दी कि ऐ अल्लाह, इबाद पर रहम कर। कितने भाग्य शाली थे वे लोग जो क़ुर्आन-ए-करीम की तिलावत में अपनी रातें व्यतीत करके आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं को प्राप्त करने वाले बने। हज़रत इबाद को अपने एक सपने के कारण यह विश्वास था कि उन्हें शहादत का स्तर प्राप्त होगा। अतः यमामा के युद्ध में उनका यह सपना पूरा हुआ तथा बड़ी दलेरी से लड़ते हुए उन्होंने शहादत पाई।

फिर इतिहास हमें एक अन्य सहाबी के विषय में बताता है जिनका नाम हराम बिन मलहान था। यह लोगों को क़ुर्आन सिखाने तथा निर्धनों और असहाब-ए-सुफ़्फ़ा (मस्जिद के सामने चबूतरे पर रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाले सहाबा) की सेवा में अग्रसर रहते थे। जब बनी आमिर के एक प्रतिनिधि मंडल ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह निवेदन किया कि हमें तबलीग़ के लिए कुछ लोग भेजें ताकि हमें भी इस्लाम का पता चले तथा हमारे लोग इस्लाम में सम्मिलित हों। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हराम बिन मलहान को अमीर बनाकर एक प्रतिनिधि मंडल बनी आमिर की ओर भेजा। यह यह मंडल वहाँ पहुंचा तो हराम बिन मलहान को सन्देह हुआ कि कोई गड़बड़ अवश्य है, इन लोगों की धारणा ठीक नहीं है। अतः उन्होंने अपने साथियों से कहा कि सावधानी बरतनी चाहिए तथा सबको एक साथ नहीं जाना चाहिए। इस लिए तुम सब यहीं रहो तथा मैं और एक अन्य साथी जाते हैं। यदि उन्होंने हमारे साथ उचित व्यवहार किया तो तुम लोग भी आ जाना, और यदि कोई हानि पहुंचाई तो फिर तुम लोग परिस्थिति के अनुसार निर्णय लेना। जब हराम बिन मलहान तथा उनके साथी उन लोगों के निकट गए तो बनी आमिर के सरदार ने एक आदमी को संकेत किया और उसने पीछे से हराम बिन मलहान पर भाले से आक्रमण किया, उनकी गर्दन से रक्त का फ़ुवारा निकला। उन्होंने इस ख़ून को अपने हाथों पर लिया और कहा कि रब्बे कअबा की क़सम मैं सफल हो गया तथा उनके दूसरे साथी को भी शहीद कर दिया गया तथा फिर पूर्ण रूप से आक्रमण करके शेष जो सत्तर लोग थे उन सबको शहीद कर दिया। जब इन लोगो को घोर रक्तपात करके शहीद किया जा रहा था तो उन्होंने यह दुआ की, कि ऐ अल्लाह! हमारा यह बलिदान स्वीकार कर ले तथा हमारी इस अवस्था की सूचना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कर दे। इस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत जिब्रईल ने इन सहाबा का सलाम पहुंचाया तथा यहाँ के हालात और शहादत की सूचना दी। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को सूचित किया कि वे सब शहीद कर दिए गए हैं। इस शहादत का आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़ा दुःख था। आपने तीस दिन तक इन क़बीले वाले के विरुद्ध दुआ की, कि ऐ अल्लाह! इनमें से जिन्होंने यह अत्याचार किया है, स्वयं उनकी पकड़ कर। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन शहादतों को बड़ी महान शहादतें घोषित फ़रमाया है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस इश्क़ व मुहब्बत और दीन के लिए महामान्य बलिदान का वर्णन करते हुए एक अवसर पर फ़रमाते हैं कि प्रेम एक ऐसी चीज़ है कि वह सब कुछ करा देती है। एक व्यक्ति किसी पर आशिक़ होता है तो अपने प्रेमी के लिए क्या कुछ नहीं कर गुज़रता। आप फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमओन की अवस्था देखो, मक्का में उनको क्या क्या कठिनाईयाँ पहुंचीं, कुछ उनमें से पकड़े गए। भिन्न भिन्न प्रकार की जटिलताओं तथा कष्टों में ग्रस्त हुए। पुरुष तो पुरुष कुछ मुसलमान महिलाओं को इतनी यातनाएँ दी गईं कि उनके विचार से भी शरीर कांप उठता है। यदि वे मक्का वालों से मिल जाते तो उस समय प्रत्यक्षतः वे उनका बड़ा सम्मान करते क्यूँकि वे उनकी ही जाति के लोग थे परन्तु वह क्या बात थी जिसने उनको कष्ट और कठिनाईयों के तूफ़ान में भी सत्य पर स्थापित रखा। वह वही सरूर और आनन्द का स्रोत था जो सत्य से प्रेम के कारण उनके सीनों से फूट निकलता था।

फ़रमाया- इस आनन्द के पश्चात जो ख़ुदा तआला से मिलता है, एक कीड़े की भांति कुचल कर मर जाना स्वीकार होता है। जिस प्रकार उस सहाबी ने कहा था कि मैंने रब्बे कअबा को पा लिया। फ़रमाते हैं कि मोमिन को कठोरे से कठोर यातना भी सरल ही हो जाती है, सच पूछो तो मोमिन की निशानी भी यही होती है कि वह मरने के लिए तय्यार रहता है। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति को कह दिया जावे कि या तो नसरानी हो जा अन्यथा हत्या कर दी जाएगी, उस समय देखना चाहिए कि उसके आत्मा से क्या आवाज़ आती है। क्या वह मरने के लिए सिर रख देता है अथवा नसरानी होने को प्राथमिता देता है? यदि वह मृत्यु को प्रमुखता देता है तो वह वास्तविक मोमिन है अन्यथा काफ़िर है। अर्थात इन कठिनाईयों में जो मोमिनों पर आती हैं भीतर ही भीतर एक प्रकार का आनन्द होता है। भला सोचो तो सही कि यदि ये कष्ट उन्हें आनन्दित न करते तो अम्बिया अलैहिस्सलाम इन कष्टों का एक लम्बा क्रम क्यूँकर व्यतीत करते।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र आत्मा ने सहाबा में एक ऐसी आत्मा फूंक दी थी कि मरते हुए भी यह कहते थे कि कअबे के रब्ब की क़सम हम कामयाब हो गए, हमने ख़ुदा को पा लिया। ये वे लोग थे जो नेकियाँ करने वाले थे। उन पर जब अत्याचार किए जाते थे तो उस अत्याचार के कारण बलिदान देते थे, न कि स्वयं अत्याचारी बन जाते थे जिस प्रकार आजकल के कुछ गुटों से शुरु किया हुआ है कि हम शहीद हो गए अथवा हो जाएंगे तो जन्नत में चले जाएंगे। ये वे लोग नहीं थे, ये लोग अत्याचार के विरुद्ध युद्ध करने वाले थे, अत्याचार फैलाने वाले नहीं थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरू एक अन्सारी सहाबी थे जो ओहद के युद्ध में शहीद हुए थे। उन्हें एक सपने अथवा ख़दा की ओर सूचना के आधार पर विश्वास था कि वे इस युद्ध में सबसे पहले शहीद होंगे, अतः ऐसा ही हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह की क़ुर्बानी और शहादत को किस प्रकार अल्लाह तआला ने स्वीकार किया, इसका वर्णन इस प्रकार मिलता है कि हज़रत अब्दुल्लाह के बेटे को शोक में देखकर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि शहादत के बाद अल्लाह तआला ने तुम्हारे बाप को अपने सामने बिठाया और फ़रमाया कि मुझसे जो चाहो मांग लो मैं तुम्हें प्रदान करूंगा। हज़रत अब्दुल्लाह ने अपने रब्ब से निवेदन किया कि ऐ मेरे ख़ुदा! मैंने बन्दगी का हक़ तो अदा नहीं किया, तेरे सम्मुख किस प्रकार इच्छा अपने मुंह से करूँ, तेरी दया और कृपा है जो प्रदान कर दे। फिर निवेदन किया कि ऐ अल्लाह! यदि इच्छा पूछता ही है तो यही है कि मुझे तू फिर से दुनिया में लौटा दे ताकि मैं फिर तेरे नबी के साथ होकर शत्रु का मुक़ाबला करूँ तथा फिर शहीद होकर वापस आऊँ। अल्लाह तआला ने फ़रमया कि मैं यह निर्णय कर चुका हूँ कि जिसको एक बार मृत्यु दे दूँ वह पुनः दुनिया में नहीं लौटाया जाता, इस लिए यह इच्छा तो तेरी पूरी नहीं हो सकती।

हज़रत अमरू बिन जमूह की बलिदान की भावना तथा शहादत का यूँ वर्णन मिलता है कि उनके पाँव के रोग के कारण बदर के युद्ध में उनके बेटों ने उन्हें शामिल नहीं होने दिया। जब ओहद का अवसर आया तो वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया कि मेरे बेटे मेरे पाँव में कष्ट होने के कारण युद्ध में सम्मिलित होने से रोक रहे हैं किन्तु मैं आपके साथ जिहाद में शामिल होना चाहता हूँ तथा कहा कि ख़ुदा की क़सम मैं आश करता था कि वह मुझे शहादत अता फ़रमाएगा तथा मैं अपने लंगड़े पाँव के कारण जन्नत में प्रवेश पा लूँगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो फिर शामिल हो जाओ। इस प्रकार हज़रत अमरू युद्ध में सम्मिलित हुए तथा ओहद के मैदान में शहीद हुए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः ये लोग ईमान में बढ़े हुए थे, विश्वास में बढ़े हुए थे, किसी भी सहाबी के वृत्तांत को ले लें। श्रद्धा और निष्ठा तथा ख़ुदा तआला के लिए जान का बलिदान देने के लिए सदैव तय्यार रहते थे। हज़रत अबू तल्हा अन्सारी को भी ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगे ढाल बनकर खड़े होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला की ओर से जो ज्ञात होता है, वह होकर ही रहता है। नीति और नियम क्या चीज़ है कुछ भी नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरे मार्ग पर जाओगे तो مُرَاغَمًا كَثِيرًا पाओगे। सत्यनिष्ठ होकर जो क़दम उठाता है ख़ुदा उसके साथ होता है अपितु इंसान यदि बीमार हो तो उसकी बीमारी दूर हो जाती है। फ़रमाया कि सहाबा का उदाहरण देखो, वास्तव में सहाबा के नमूने ऐसे हैं कि समस्त नबियों का उदाहरण हैं। ख़ुदा को तो कर्म ही पसन्द हैं, उन्होंने बकरियों की भांति अपनी जानें दीं। क़ुर्आन शरीफ़ से सिद्ध होता है कि हवारियों को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की सच्चाई पर सन्देह था इसी लिए तो मायदा मांगा और कहा- ونعلم ان قد صدقتنا ताकि तेरा सच्चा और झूठा होना सिद्ध हो जाए। इससे ज्ञात होता है कि मायदा के अवतरित होने से पहले उनकी दशा نعلم की न थी। फिर जैसी

कठिनाई का जीवन सहाबा ने व्यतीत किया उसका उदाहरण नहीं पाया जाता। सहाबा किराम का गिरोह भी विचित्र गिरोह था, अनुसरण योग्य तथा आरदणीय गिरोह था, उनके दिल विश्वास से परिपूर्ण थे। जब विश्वास होता है तो धीरे धीरे प्रथम अवस्था में माल इत्यादि देने को जी चाहता है, फिर जब बढ़ जाता है तो विश्वास करने वाला ख़ुदा के लिए जान देने को तय्यार हो जाता है। यह विश्वास भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र आत्मा के कारण हर समय बढ़ता ही चला जा रहा था। सहाबा की दैनिक जीवन चर्या भी इश्क़-ए-रसूल के अद्‌भुत दृश्य दिखाते हैं। प्रयास रहता था कि किस प्रकार कोई अवसर मिले और हम अपने स्नेह को प्रकट करें। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरू के विषय में आता है कि वे हर समय इस सोच में रहते थे कि किस प्रकार सामान्य अवस्था में भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत और वफ़ा को प्रकट करें।

सहाबा को आरम्भ में अपने निकट वर्ती रिश्तेदारों को भी तबलीग़ करने में बड़ी कठिनाईयाँ पेश आती थीं। कहीं बेटा मुसलमान हुआ और बाप नहीं तो कठिनाईयाँ हैं, कहीं कोई कमज़ोर रिश्तेदार मुसलमान हुआ तो दूसरे बड़े रिश्तेदार तंग कर रहे हैं। हज़रत अमरू बिन जमूह से पहले इनके बेटे ने बैअत कर ली थी। वह प्रतिदिन रात को अपने बाप के बुत उठाकर कूड़े में फेंक देते, जिससे वे अप्रसन्न होते, अन्ततः तंग आकर अमरू बिन जमूह ने कहा कि वह बुत जिसे मैंने ख़ुदा बना रखा है, स्वयं अपनी सुरक्षा नहीं कर सकता वह मेरी क्या रक्षा करेगा और इस्लाम क़बूल कर लिया।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपने सहाबा से मुहब्बत का जो व्यवहार था और फिर जिस प्रकार आपकी दिव्यात्मा से, अल्लाह तआला से इन सहाबा का सम्बंध पैदा हुआ और फिर ख़ुदा तआला भी कई बार इन सहाबा को सीधे ही अथवा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से इनको पुरस्कृत करता था।

हज़रत अबी बिन कअब के अल्लाह से सम्बंध का एक वृत्तांत बुख़ारी में यूँ मिलता है कि एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा कि अल्लाह तआला ने मुझे यह आदेश दिया है कि मैं तुझे क़ुर्आन पढ़ कर सुनाऊँ। हज़रत अबी बिन कअब आश्चर्य से पूछने लगे कि क्या अल्लाह तआला ने मेरा लेकर फ़रमाया? आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ, तुम्हारा नाम लेकर कहा है। इस पर अबी बिन कअब भावुक होकर रोने लगे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें لم يكن الذين كفروا की सूरः पढ़ कर सुनाई, अर्थात सूरः अलबय्यिनः। एक बार किसी ने अबी बिन कअब से पूछा कि आप तो यह बात सुनकर बड़े प्रसन्न हुए होंगे तो उन्होंने उत्तर दिया कि जब अल्लाह तआला ने कहा है कि अल्लाह तआला की कृपाओं तथा रहमतों को देख कर और याद करके प्रसन्न हुआ करो तो मैं प्रसन्न क्यूँ न होता।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- तो ये थे वे सहाबा जो उन्नति करते करते अपनी चरम सीमा तक पहुंच गए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- आख़िर सहाबा ने वह पाया जो दुनिया ने कभी न पाया था और वह देखा जो किसी ने न देखा था। सहाबा किराम के युग को यदि देखा जाए तो वे लोग बड़े साधारण और सरल स्वभाव के थे जो अल्लाह के कलाम के प्रकाश से प्रकाशमान तथा तामसिक वृत्ति के ज़ंग से पूर्णतः साफ़ थे। मानो قد افلح من زكّها के सच्चे चरितार्थ थे। फिर आप फ़रमाते हैं कि सहाबा ने इतनी अधिक सत्यनिष्ठा दिखाई कि न केवल बुतों की उपासना तथा प्राणियों की उपासना से ही मुंह मोड़ा अपितु उनके अन्दर से दुनिया की इच्छा ही विलुप्त हो गई और वे ख़ुदा को देखने लग गए। वे बड़ी तत्परता से ख़ुदा के लिए ऐसे सत्यनिष्ठ थे कि मानो उनमें से प्रत्येक इब्राहीम था। फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक शरीर की भांति हैं तथा आपके सहाबा किराम आपके अंग हैं। अल्लाह तआला हमें सही रंग में सहाबा के स्तर को भी पहचानने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा उनके नमूनों पर चलते हुए अपनी श्रद्धा और निष्ठा को भी बढ़ाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।